दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-7

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

DTVF / OPT-23 **HL-2307**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Pritesh Singh Rajput

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03/08/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]: 7 7 0 8 5 1 1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राम नाम के पटतरै, देबे कौं कुछ नाहिं।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माहिं।।

संदर्भ – प्रस्तुत दोहा भक्तिकाल के प्रसिद्ध रचनाकार एवं भक्त कबीर के दोहों में से है जिसे कबीर ग्रंथावली में संकलित किया गया है।

प्रसंग – कबीर ने राम के नाम को सुमरने पर बल दिया है।

व्याख्या – कबीर दास कहते हैं कि राम का नाम लगातार लेते रहो क्योंकि देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं है। राम नाम का जप करके ही संतोष प्राप्त कर राम के प्रेम में अनवरत रहना चाहिये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष

① राम नाम की महिमा का गुणगान किया गया है।

② कबीर ने भक्ति की जगह प्रेम को महत्व दिया है।

③ दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रस्तुत पद्य तुलसीदास जी के रचना 'कवितावली' के उत्तरकांड से लिया गया है।

प्रसंग सुख की प्राप्ति के लिये राम का नाम रटने के लिये जोर दिया जा रहा है।

व्याख्या तुलसीदास जी कहते हैं कि यदि संकट का समय समाप्त नहीं हो रहा, तो विरह व ज्ञान जो सब झूठ व मुफ्त के है उन्हे छोड़कर निरंतर राम का नाम रटने से सुख की प्राप्ति होगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① राम की भक्ति का महत्व बताया गया है।

② भाषा अवधी है।

③ पद्य गेयतापूर्ण और सरस है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ — प्रस्तुत पद्यांश आधुनिक कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के रचना 'कुरुक्षेत्र' से लिया गया है।

प्रसंग — महाभारत के युद्ध के समाप्ति पश्चात युधिष्ठिर के मन में उठने वाले प्रश्नों के संदर्भ में है।

व्याख्या — भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं कि न्याय को बचाने के लिये युद्ध को स्वीकारना पड़ता है। जो पाप को देखकर भी कुछ नहीं करता वही नरक का भागी होता है न कि वह जो रण में युद्ध के लिये तैयार होकर सत्य का साथ देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① असत्य व सत्य क्या है? इस पर विचार किया गया है।

② ~~सत्य~~ अन्याय के विरुद्ध युद्ध भी स्वीकार्य है।

③ भाषा खड़ी बोली है।

④ नवजागरण पर आधारित भावना व्याप्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहिं परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक बिहारी के 'बिहारी सतसई' से यह पद्यांश लिया गया है।

प्रसंग जब राजा जयसिंह अपने जनता के प्रति उदासीन हो जाते हैं तो बिहारी द्वारा यह उपदेश दिया जाता है।

व्याख्या बिहारी कवि कहते हैं कि जिस प्रकार फूलों में पराग और शहद समाप्त हो गये हैं वैसे राज्य से सुख, शांति और विकास का पतन हो गया है।

राजा युवती की उभरती यौवन में मुग्ध है तो आगे जब यौवन पूर्णत: आ जायेगा तो राजा का क्या हाल होगा, वह और भी विलासी हो सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① रीतिकालीन कवियों के विपरीत राजा ~~अ~~ पर व्यंग्य मारा गया है।

② प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग है।

③ राजा को विलासिता छोड़ने की भाव आता है।

④ ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रस्तुत पद्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की कालजयी रचना 'राम की शक्ति-पूजा' से लिया गया है।

प्रसंग राम की सेना रावण की सेना से प्रथम दिन जब पराजित होकर लौटती है उस समय राम के स्थिति पर वर्णन किया गया है।

व्याख्या युद्ध से वापस लौटरहे सेना में राम आगे कदम बढ़ाते जा रहे हैं, धनुष ~~ढ~~ ढीला हो गया है। मुकुट अपनी जगह से हट गया है तथा बाल बिखरे हुए हैं यह बाल कंधों व ~~छ~~ वक्ष पर लटक रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह रोशा प्रतीत हो रहा है पर्वतों में अंधकार छा गया हो तथा दोनों आँखें तारों के चमकने का आभास करा रहा है।

विशेष

① राम के निराशामय स्थिति का वर्णन है।

② प्रकृति का मानवीयकरण किया गया है। (आँख व तारा)

③ बिंबात्मकता स्पष्ट रूप से झलक रही है।

④ भाषा तत्समी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।'-क्या सूर का काव्य इस कथन की पुष्टि करता है? विश्लेषणात्मक उत्तर दीजिये। 20

सूरदास जी को रचनाएँ भक्तिकालीन कवियों में जिस हाते से अलग व नई दिशा की भान कराता है वह उपालंभ। उपालंभ से आशय 'उलाहना देना' से होता है। सूरदास भ्रमरगीत के माध्यम से गोपियों द्वारा उधौ, कृष्ण, कुब्जा और अक्रूर का उलाहना देते हैं। गोपियों को जब उधौ शुष्क और निर्गुण ज्ञान मार्ग की शिक्षा देते हैं तो गोपियाँ चिढ़ कर उलाहना भरे शब्दों से कहते हैं :—

"निरगुन कौन देस के बासी।"

गोपियों द्वारा उधौ के साथ ही श्री कृष्ण पर भी उपालंभ दिया जाता है क्योंकि श्रीकृष्ण गोपियों के विरह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

को मिटाने स्वयं न आकर राजनीति व्यवस्था के रूप में अपने प्रतिनिधि उधौ को भेज देते हैं -

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।"

सूरदास यहीं नहीं रूकते वे ग्रामीण संस्कृति के माध्यम से लोक संस्कृति उभारने मथुरा नगरी पर भी उपालंभ लिखते हैं।

इसमें मथुरा को काली नगरी कहकर कटाक्ष किया जाता है।

सूरदास जी द्वारा सभी पक्षों को लेकर उपालंभ कही गयी है जिसमें गोपियों द्वारा उधौ, ज्ञान मार्ग, कृष्ण पर प्रमुख है। यशोदा माँ द्वारा भी नंद जी के प्रति कृष्ण व बलराम को मथुरा छोड़

Copyright – Drishti The Vision Foundation

के आ जाने पर नाराजगी व्यक्त किया गया है।

सूरदास जी कि यह उपालंभ की क्षमता को देखकर ही कहा गया है -

"उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिहारी' की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी केवल एक कवि के रूप में इतिहास (साहित्य की) में नाम दर्ज नहीं कराते बल्कि इससे और आगे बढ़कर भाषाविद्, ज्योतिषि, समाज सुधार (कुछ मात्रा में) भी स्थापित है।

① कवि के रूप में -

कवि के रूप में बिहारी द्वारा एक महा रचना 'बिहारी सतसई' लिखि गई है किंतु इसमें अपने कविता का इसकी समृद्धि गढ़ दिये हैं कि 'सतसई' शब्द बिहारी के लिये रूढ़ हो गया है।

② भाषाविद् के रूप में —

भाषा विद के रूप में अपनी कविताओं में शब्दों का चयन और समासिता की उपास्थिति से चमत्कार ही पैदा कर देते हैं। इनकी ऐसी ही एक कविता है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात;
भरे भौन में नैननु करत हों सौं बात।"

③ ज्योतिष के रूप में -

अपनी रचनाओं में ज्योतिषशास्त्र का भी समावेशन करते है -

"मंगलु, बिंदु, सुरंगु, मुखु, ससि केसरि-आड़ गुरु"

④ राजनीतिक विषय में —

भले ही बिहारी रीतिकाल में दरबारी कवि के रूप में राजनीतिक कटाक्ष करने का अवसर न मिले लेकिन जब कभी समय मिलता अवसर का लाभ उठा कर राजनीतिक कटाक्ष करते। जिसमें एक कविता राजा के ऊपर भी लिखे—

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"नहिं पराग, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यो, आगैं कौन हवाल॥"

इस प्रकार बिहारी की बहुज्ञता को बताया जा सकता है। बिहारी अपने इसी बहुज्ञता के बल पर रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि होने की दौड़ में सबसे आगे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'निराला' जी के सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में शामिल 'राम की शक्ति-पूजा' शक्ति की मौलिक कल्पना पर आधारित है।

जब राम अंधकार, असफलता या डर में अपने स्थिति को पाते हैं तो राम जी को शक्ति की मौलिक कल्पना करने को कहा जाता है। राम शक्ति की मौलिक कल्पना करते भी हैं और शक्ति राम के बदन में लीन हो जाती है -

"होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन,
कह महाशक्ति हुई राम के मुख में लीन।"

यहाँ शक्ति बहु अर्थ में प्रस्तुत हुआ है। कुछ आलोचकों ने इसे निराला जी के जीवन की कहानी मानकर निराला जी के अंधकार मय जीवन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्ति की कल्पना को प्रदर्शित करते हैं।

इसके एक प्रतिमान हिन्दी स्वतंत्रता संग्राम में फैली निराशा में जनता की आंतरिक शक्ति की जागृति के रूप में भी लिया जाता है। इस संदर्भ में रावण को ब्रिटिश राज माना गया है।

इस प्रकार 'राम की शक्तिपूजा' अपने विभिन्न प्रतिमानों के लिये आज भी ~~अंध~~ अंधकार में प्रकाश की तलाश के लिये कह रहा है—

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते हैं। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर दास भक्तिकाल के सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों में से एक हैं। कबीरदास जी को प्रायः भक्त कवि के रूप में स्वीकार किया जाता है।

कबीर दास जी के दोहे सामान्य स्वरूप में जनमानस में व्याप्त समस्यों पर आधारित होते हैं किंतु इसमें सूक्ष्म अध्ययन पर रहस्यात्मकता का गुण भी दिखाई देता है। कबीर के रहस्यवाद को तीन रूपों में देख सकते हैं:-

- प्रेममूलक रहस्यवाद
- साधनमूलक रहस्यवाद
- अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद

(ख)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

① प्रेममूलक रहस्यवाद :-

कबीर प्रेम के मार्ग को स्वीकार करते है तथा संयोग व वियोग दोनों प्रकार के सौन्दर्य से युक्त प्रेम का वर्णन करते हैं। उनकी वियोग पर आधारित यह कविता प्रेममूलक रहस्य का चरम है—

" तलफै बिन बालम मोरा जिया,
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया,
तलफ - तलफ के भोर किया।"

② साधनामूलक रहस्यवाद :-

कबीर जी साधना को स्वीकार करते हैं किंतु इसमें सिद्धों व नाथों की अक्खड़ता व आत्मता का तत्व विद्यमान होते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

" हम जारा अपना घर लिये मुराड़ा हाथ,
अब जारत तासी का जो चले हमारे साथ।"

③ अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद —

कबीर के रचनाओं में 'संधा भाषा' के प्रयोग से रहस्यात्मकता का बोध ज्यादा प्रभावी हो जाता है। 'संधा भाषा' कबीर को साहित्य के विरासत के रूप में सिद्धों व नाथों से प्राप्त हुआ है।

'संधा भाषा' को कबीर की उलटबासी के रूप में कहा जाता है। इसकी विशेषता होती है कि यह सामान्य रूप में रहस्यमय बात लगती है किंतु अर्थ समझ आ जाने पर वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है।

ऐसे ही एक उलटबासी है—

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

" नैया बिच नदियां डूबती जाय"

इस प्रकार कबीर के रचनाओं में रहस्यवाद के स्वरूप को दिखाया जा सकता है जो दूसरे कवियों के रहस्यवाद से अपनी आक्रमक स्वरूप को धारण किये हुए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य की परिकल्पना' पर प्रकाश डालिए। 15

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के 1000 वर्षों के इतिहास में एक जननायक कवि के रूप में स्थापित हैं। इनके रचनाओं में केवल राम का चरित्र चित्रण नहीं है बल्कि समाज के सभी वर्गों की व्यथा का चित्र है। इसी में एक 'रामराज्य की परिकल्पना' भी है।

रामराज्य किसी एक क्षेत्र या देश नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत को रामराज्य के रूप में स्वीकारता है।

गोस्वामी तुलसी दास के अनुसार राम राज्य एक ऐसा राज्य है जहाँ सभी व्यक्तियों को सुख का कामना कर सुख की पूर्ति किया जाता है, सभी वर्गों में समानता का भाव होता, सभी व्यक्तियों के आवश्यकताओं की पूर्ति किया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दैहिक, दैविक तथा भौतिक ताप रामराज्य में काम नहीं रख सकता। शोषण का पूर्ण उन्मूलन हो जाता है। राजा अपने प्रजा का हितों को ध्यान में रखकर निर्णय करता है। तुलसीदास जी इस संदर्भ में कहते हैं —

"दैहिक, दैविक भौतिक तापा,
रामराज्य कहूँ नहिं व्यापा।"

इसके साथ ही रामराज्य में सभी के साथ न्याय किया जाता है, अन्याय का कोई जगह नहीं होता।

स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी द्वारा भारत के लिये रामराज्य की इसी संकल्पना को बनाने व स्वीकार करने का सिद्धांत दिया गया था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गजानन माधव मुक्तिबोध एक प्रगतिवादी कवि हैं जिनके दर्शन में मार्क्स और सिग्मन फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद का गहरा प्रभाव पड़ा है।

मुक्तिबोध अपने विख्यात रचना 'ब्रम्हराक्षस' में इस दर्शन को उतारते हैं। ब्रम्हराक्षस मूलत: 'आत्मचेतन से विश्वचेतन' के द्वन्द्व की कहानी पर आधारित है। किंतु मुक्तिबोध प्रगतिवाद का पूर्ण समर्थन नहीं करते है।

लकीर के फकीर नहीं —

① प्रगतिवाद जहाँ समाज के द्वारा व्यक्ति के निर्माण को स्वीकार करता है वहीं मुक्तिबोध ने 'ब्रम्हराक्षस' में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्ति को केन्द्र में रखा है।

② प्रगतिवाद वस्तुनिष्ठता का समर्थन करता है, किंतु मुक्तिबोध जी द्वारा व्यक्ति को स्वीकार कर व्यक्तिनिष्ठता पर जोर देते हैं।

③ प्रगतिवाद समाज में उच्च वर्ग व निम्नवर्ग के रूप में दो ही वर्ग को स्वीकार करता है।

तो मुक्तिबोध जी जी का 'ब्रम्हराक्षस' पूर्णत: मध्यमवर्ग के मानदण्ड पर आधारित है।

④ प्रगतिवाद उच्चवर्ग व निम्न वर्ग के संघर्ष की बात करता है, तो मुक्तिबोध जी मध्यमवर्ग के अपने कार्यों व दायित्व के न निभा पाने के संघर्ष को 'ब्रम्हराक्षस' मे उद्धृत किया है।—

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"बंद कमरे में वह,
गणित करता रहा,
औ, मर गया।"

इस प्रकार मुक्तिबोध अपनी मौलिकता को बनाये रखने तथा मध्यमवर्ग को साहित्य से जोड़ने 'लकीर की फकीर' को अस्वीकार कर दिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमय किय लोचन-जगत॥

संदर्भ प्रस्तुत पद्य रीतिकालीन कवि बिहारी के 'बिहारी सतसई' से लिया गया है जिसका संकलनकर्ता आचार्य शुक्ल जी हैं।

प्रसंग नारी के सौन्दर्य का सूक्ष्म वर्णन किया गया है।

व्याख्या बिहारी कवि कहते हैं कि जब मंगल, बृहस्पति और चंद्रमा एक रेखा में आ जाते हैं तब जैसा स्थिति बनती है वही नारी के तिलक लगाने पर बनती है। नारी पूरी जगत में रसमय रूप धारण कर लेती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

① श्रृंगार रस की प्रधानता है।

② नारी के सौन्दर्य का अति सूक्ष्म वर्णन किया गया है।

③ बिहारी जी के ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान का बोध होता है।

④ रूपक अलंकार का प्रयोग दर्शनीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरवा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ प्रस्तुत पद्यांश अवधी भाषा के सर्वश्रेष्ठ रचना में से एक 'पद्मावत' से लिया गया है जिसके रचयिता मलिक मोहम्मद जायसी जी हैं।

प्रसंग राजा रत्नसेन द्वारा नागमती को छोड़कर सिंहलद्वीप जाने के पश्चात् नागमती के विरह को दर्शाया गया है।

व्याख्या नागमती रत्नसेन को स्मरण कर कहती है कि अब तो भाद्रपद आ गई है लेकिन मैं अपने ~~अपने~~ विरह को कैसे कम करूँ वे कहते हैं कि जिस प्रकार वर्षा हो रही है उसी प्रकार मेरे विरह से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आँसू बहते जा रहे हैं वर्षा के कारण ओरी से पानी गिरना ऐसा लग रहा है मानों आँखों के किनारों की आँसू के दर्शा रही है।

विशेष

① विरह का सामान्यीकरण किया गया है। नागमती के विरह रानी की नहीं बल्कि सामान्य नारी का स्रोत होगा है।

② प्रतीकात्मक भाषा का उल्लेख है।

③ ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहउँ हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ प्रस्तुत पद्य 'कवितावली' के 'सुंदरकांड' से लिया गया है जिसके रचयिता तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग विभीषण द्वारा हनुमान जी को लंका नगरी में प्रवेश के संदर्भ में जानकारी दे रहे हैं।

व्याख्या विभीषण कहते हैं कि हे हनुमान! लंका नगरी में प्रवेश के पश्चात् तुम्हें 14 भवन दिखाई देंगे जिसमें से एक लंकापति रावण का होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुम्हें सैनिकों से बचकर रहना होगा।

राम के शरण में विभीषण जाने के विचार में हनुमान जी कहते हैं कि राम क्रोध, लोभ यह सब नरक जाने के रास्ते हैं तथा जो व्यक्ति राम के शरण में पहुँच जाता है वह संत बन जाता है।

विशेष

① राम की भक्ति व शक्ति के महिमा का वर्णन है।

② अवधी भाषा का प्रयोग जिसमें संस्कृत के शब्द भी शामिल हैं।

③ छंद में दोहा व सवैया का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

संदर्भ प्रस्तुत पद्य आधुनिक काल के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के रचना 'कुकुरमुत्ता' से लिया गया है।

प्रसंग गुलाब के रूप में पूंजीवाद व अभिजात्य वर्ग पर व्यंग्य किया गया है।

व्याख्या

निराला जी कहते हैं कि गुलाब जिसे भी तुम मिला वह अपनी हार स्वीकार कर भागा है, जैसे महिला-प्रधान(?) के व्यक्ति मैदान छोड़कर भागते हैं जैसे गधे तबेले को तोड़ भागते हैं।

तुम हमेशा से ही राजाओं अमीर वर्ग का प्यारा व दुलारा बन कर रहे हो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा साधारण वर्ग के प्रति उदासीनता का भाव प्रकट करते रहे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① पूंजीवाद का प्रतीक रूप में कटाक्ष किया गया है।

② पूंजीवाद का सामान्य वर्ग के प्रति उदासीनता का भाव दिखाया है।

③ पूंजीवाद को कठोर बताया है।

④ भाषा सरल व सहज तथा गेयपूर्ण है।

⑤ प्रतीकात्मक भाषा प्रयुक्त होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रस्तुत पद्य ~~अज्ञेय~~ 'अज्ञेय' के सबसे प्रसिद्ध रचना 'असाध्यवीणा' से लिया गया है।

प्रसंग जब सभी बड़े कलावंत असाध्यवीणा से ध्वनि प्रकट नहीं कर पाये तब राजा का विचार प्रकट होता है।

व्याख्या राजा कहता है कि मेरे सभी प्रसिद्ध कलाकार असफल हो गये किसी ने भी असाध्यवीणा का वादन नहीं कर पाये। अब तो असाध्यवीणा विख्यात हो गई है। लेकिन मेरा अब भी विश्वास है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वज्रकीर्ति का तप व्यर्थ नहीं जायेगा। वीणा से ध्वनि अवश्य निकलेगा जब इसे कोई सच्चा सिद्ध पुरुष गोद में लेकर सच्ची श्रद्धा से शून्य में डूब जायेगा।

विशेष

① असाध्यवीणा के प्रारंभिक असाध्यता दिखाई देता है।

② वीणा को बजाने सच्ची सिद्धि की आवश्यकता महसूस होती है।

③ भाषा सरल व सहज है।

④ प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

आधुनिक हिन्दी साहित्य की अंतिम स्वीकार्य महाकाव्य 'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद जी ने 'मनु', 'श्रद्धा' व 'इड़ा' के माध्यम से मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी कही है।

जयशंकर प्रसाद जी आमुख में स्वयं कहते हैं – " मनु अर्थात् मन के साथ ~~श्रद्धा (बुद्धि) और इड़ा (मन)~~ श्रद्धा (हृदय) और इड़ा (बुद्धि) को मानव के विकास का आधार के रूप में भी देखा जा सकता है।"

मानव-मन के विकास की कहानी

जब व्यक्ति / मानव का जन्म होता है तो वह मनु की तरह अकेला महसूस करता है फिर धीरे-धीरे हृदयता जागती जाती है जिसे श्रद्धा सं सर्ग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के रूप में देखा जा सकता है। मानव-मन और बढ़ता है और यौवन के विकसित होने से स्वाभाविक भावनाओं की उत्पत्ति के रूप में काम चेतना का विकास होता है जो श्रद्धा के साथ जगत के निर्माण को पूरा करता है। इस यौवनावस्था में व्यक्ति में अति चंचलता की ~~मान क्री~~ मनःस्थिति होती है और भटकाव भी आता है जिसे मनु का इड़ा के प्रति आकर्षण के रूप में देख सकते हैं।

जब मानव-मन श्रद्धा व इड़ा के रूप में हृदय व बुद्धि दोनों को प्राप्त कर लेता है तो मन शांत हो जाता है और चेतन: आनंद को प्राप्त करता है यही कामायनी के अंतिम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्ग में मनु के साथ 'आनंदमूलक रस' की प्राप्ति के रूप में दिखाई गई है।

मानवता का विकास

कामायनी में मानवता का विकास को मनु और श्रद्धा के मिलन से लेकर मानव' को इड़ा के पास छोड़ने तक देख सकते हैं। मानवता का विकास तभी होता है जब उसमें श्रद्धा के जैसे त्याग, शांति हो तथा इड़ा की तरह तर्कमूलक क्षमता हो। इसी को कामायनी में श्रद्धा सर्ग से लेकर आनंद सर्ग तक ~~दिखाया~~ दिखाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार 'कामायनी' अपनी भावनात्मक रूप में 'मानव-मन' के साथ साथ 'मानवता' के विकास की कहानी को सर्गों के द्वारा विभाजित कर सूक्ष्मता से दिखाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी साहित्य के 1000 वर्षों के इतिहास में जैसे बिंब का योजना बिहारी के रचनाओं में दिखता है वैसा टक्कर किसी अन्य कवियों द्वारा नहीं मिलता है।

बिहारी की यह शैली है कि वे एक ही दोहे में किसी घटना के श्रृंखला का पूर्ण उल्लेख कर पाठक के मन में पूरी कहानी को फिल्मों की तरह चला देते हैं।

बिंब योजना का चरम स्वर इस पंक्ति में देखा जा सकता है—

'कहत, नटत, रीसत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात,

भरे भौंन में नैनहु करतहीं सौ बात।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपरोक्त पंक्ति में ? होड़ाये एक ही पंक्ति में कह दिया गया है। यह पंक्ति ऐसे बिंब का निर्माण करता है कि पाठक के मन में घस जाता है। पाठक को यह अनुभव होने लगता है कि उसके सामने ही यह घटना हो रहा है।

बिहारी जी के बिंब योजना के इस क्षमता के कारण ही पाठकों पर गहरा असर पड़ने की स्थिति को देखकर कहा जाता है—

"बिहारी के दोहे देखन में लगे छोटन,
चले नाविक के तीर, घाव करे गंभीर।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जायसी और कबीर दोनों भक्तिकाल काल के कवि हैं। जहाँ जायसी संतकाव्य धारा के प्रतिनिधि हैं तो कबीर प्रेमकाव्य धारा के।

जायसी और कबीर दोनों के कविताओं में तसव्वुफ के एकात्मक रहस्यवाद के लक्षण दिखते हैं।

किंतु जायसी सूफी सिद्धांतों पर आधारित तसव्वुफ को रहस्यवाद के माध्यम से व्यक्त करते हैं। 'पद्मावत' रचना में अपनी रहस्यवाद के कविता के अंतिम दो पंक्तियों में उभारते है –

"देह मरै मरै न बासु"

अर्थात् शरीर या व्यक्ति की मृत्यु हो जाता है किंतु उसकी प्रसिद्धि व कर्म जिंदा रहता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वहीं कबीर की रहस्यवाद में प्रेममूलक, साधनामूलक व अभिव्यक्तिमूलक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। प्रेममूलक रहस्यवाद में वियोग का दृश्य देखते ही बनता है –

"तलफै बिन बालम मोरा जिया,
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया,
तलफ तलफ के भोर किया।"

इसके साथ ही कबीर अपने कविताओं में रहस्यवाद में अक्खड़ता व आक्रमकता का संयोजन कर नए तरह के रहस्यवाद की अभिव्यक्ति का सृजन करते हैं।

"नैया बिच नदिया डूबती जाए"

इस प्रकार के रहस्यवाद की उपस्थिति कबीर को सिद्धों व नाथों से प्राप्त हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार जायसी के रहस्यवाद को सूफी परम्परा पर ~~आग~~ आधारित माना जा सकता है जो कबीर में उसकी आक्रमता के साथ संधा भाषा का घुलन के रूप में रहस्यवाद को उल्लेखित किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'मुक्तिबोध परंपराभंजक अनगढ़ काव्यभाषा के कवि हैं।' 'ब्रह्मराक्षस' कविता के आधार पर विचार कीजिये। 15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation